डेंगू वायरस-2 संक्रमण और प्रतिकृति पर पपीते की पत्तियों से प्राप्त एक प्रमुख क्षार कार्पेन का प्रभाव

Kalichamy Alagarasu [1], Madhura Punekar [1], Poonam Patil [1], Bhagyashri Kasabe [2], Mahadeo Kakade [1], Kusuma Sai Davuluri [1], Sarah Cherian [2], Deepti Parashar [1]

https://onlinelibrary.wiley.com/doi/10.1002/ptr.7715

डेंगू बुखार के इलाज के लिए पारंपरिक उपचारों का उपयोग किया जा रहा है और कई अध्ययनों ने डेंगू रोगियों के इलाज में पपीते के पत्तों के अर्क के उपयोग की सूचना प्रकाशित की है। पपीते की पत्तियों के अर्क का उपयोग कई मामलों में थ्रोम्बोसाइटोपेनिया (रक्त में प्लेटलेट्स की संख्या में लगातार कमी होना) के इलाज में बड़े पैमाने पर किया गया है। पपीते की पत्तियों के अर्क से प्राप्त किए गए यौगिकों में, कार्पेन एक प्रमुख क्षारीय और सक्रिय यौगिक है। कार्पेन में एंटीथ्रोम्बोसाइटोपेनिक गतिविधि होने की जानकारी संप्रेषित की गई है ।

कार्पेन की डेंगू वायरस विरोधी गतिविधि अब तक रिपोर्ट नहीं की गई थी इसलिए इस अध्ययन में हमने बायोएक्टिव यौगिक कार्पेन की एंटीवायरल गतिविधि की जांच और डेंगू वायरस प्रतिकृति के खिलाफ एंटीवायरल गतिविधि का परिक्षण किया । इस अध्ययन में डेंगू वायरस विरोधी कृत्रिम परिवेशीय (इन-विट्रो) और इन-सिलिको के साक्ष्य प्राप्त हुए है । इन-विट्रो और इन-सिलिको प्रयोगों के अवलोकन से यह भी पता चलता है कि कार्पेन, वायरस जीवन चक्र के शुरुआती और बाद के चरणों के दौरान भी कार्य कर सकता है। हालाँकि, पशु मॉडल और नैदानिक परीक्षणों से सुरक्षा, एंटीवायरल और इम्यूनोमॉड्यूलेटरी (जो आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को बदल देती हैं ताकि यह अधिक प्रभावी ढंग से काम करे) गतिविधियों से संबंधित अधिक साक्ष्य उत्पन्न करने की अभी भी आवश्यकता है।